बहुत ज़रूरी है बच्चों की सुरक्षा पर बात करना

अर्बन95 टीम ने बच्चों में चोट लगने के कारणों का किया विश्लेषण

०५ साल तक के बच्चों को जाने- अनजाने में लगने वाली चोटें, स्वास्थ्य और विकास से जुडी एक बड़ी समस्या है, जिस पर तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता है। घर, सार्वजनिक स्थानों और सीखने के स्थानों पर बच्चों को लगने वाली चोटें-दुर्घटनाएं और उनके साथ होने वाली हिंसा उन्हें आने वाले जीवन में ना केवल स्थायी रूप से पंगु बना सकती हैं बल्कि उनकी जान ले सकती हैं। ज्यादातर मामलों में ये दुर्घटनाएं अनजाने में होती हैं। यह दुनिया भर में ४५ लाख बच्चों की हर साल मौत की जिम्मेदार भी हैं (विश्व स्वास्थ्य संगठन-वैश्विक बीमारी सर्वेक्षण २०१३) इन मौतों के अलावा लाखों बच्चों को इन चोटों के चलते अस्पताल में देखभाल की ज़रूरत होती है। कई बच्चे इसके चलते स्थायी रूप से विकलांग भी हो जाते हैं। यह उनके आने वाले पूरे जीवन को बुरी तरह से प्रभावित करता है।

ICLEI साउथ एशिया, उदयपुर की अर्बन95 प्रोजेक्ट मैनेजमेंट टीम ने बच्चों को लगने वाली चोटों और उनके कारणों पर पिछले दिनों एक विश्लेषण किया। इसके तहत, बच्चों को लगने वाली चोट, उनके कारण और शहर में उजागर हुए कुल मामलों की स्थिति को समझा। यह सारी कवायद प्रोजेक्ट के अंतर्गत शहर के लिए बन रही बाल सुरक्षा गाइडलाइन के लिए की गयी। केयरगिवर्स, चिकित्सकों- अस्पतालकर्मियों आदि से चर्चा और सामने आये आंकड़ों के अनुसार पाया गया कि हर बार इसमें बच्चों की गलती नहीं होती। कई बार केयरगिवर्स की जानी- अनजानी गलतियों, ढांचागत निर्माण (infrastructure),

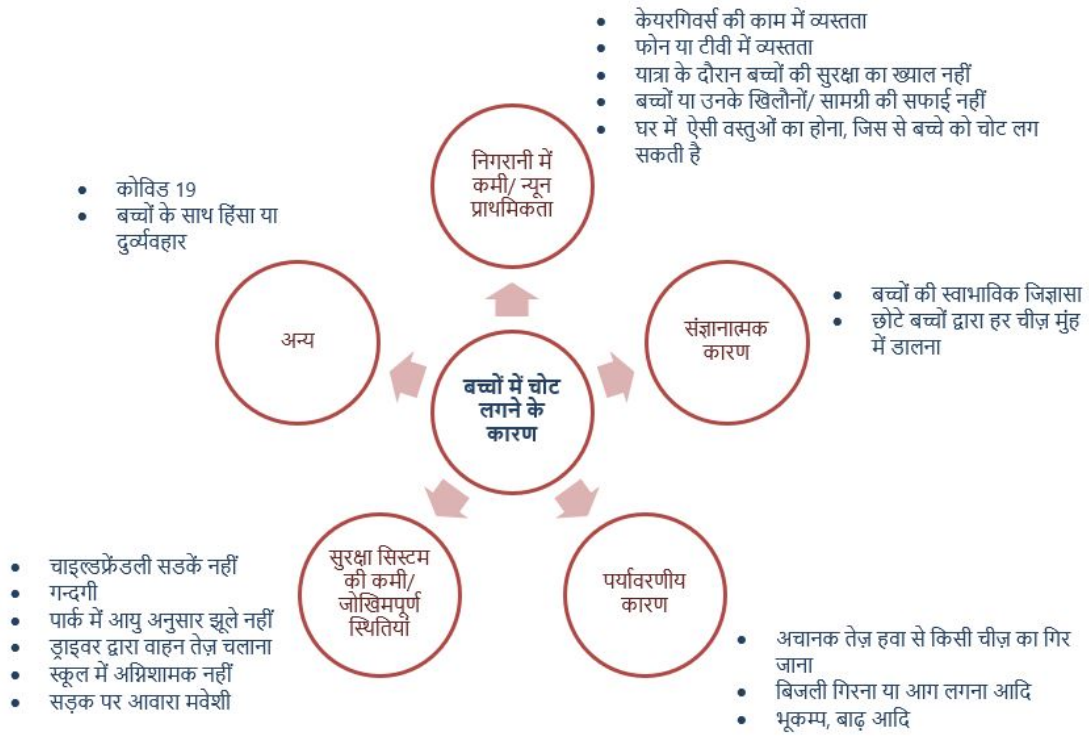

बच्चों में चोट लगने के कारण

बेतरतीब ट्रेफिक, फुटपाथ का न होना या टूटा होना, प्ले ग्राउंड्स की कमी या उनका चाइल्ड फ्रेंडली न होना, सड़क पर आवारा मवेशी, सेवा प्रदाताओं (service providers) को प्रशिक्षण की कमी आदि भी बड़े कारण हैं। इन सब के चलते बच्चों के साथ-साथ परिवारों (विशेषतौर पर कम आय वाले), समाज और राष्ट्र पर इसका विपरीत प्रभाव पड़ता है। इस से सबकी वृद्धि पर नकारात्मक असर होना स्वाभाविक है। बच्चों की चोट से परिवारों की शारीरिक, मानसिक और वित्तीय स्थिति पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ता है, जिसका असर बच्चों के विकास पर पड़ना भी स्वाभाविक है। बच्चों को लगने वाली चोटों और उनके साथ होने वाली दुर्घटनाओं पर बात करना उतना ही ज़रूरी है, जितना उनके स्वास्थ्य के बारे में बात करना ज़रूरी है। बच्चों की चोट या दुर्घटनाएं उनके स्वास्थ्य से जुड़ा बेहद करीबी मुद्दा है। जैसे हम बच्चों के टीकाकरण, पोषण, स्तनपान, विकास निगरानी (growth monitoring), डीवर्मिंग आदि पर ध्यान देते हुए देश में लाखों बच्चों की जान बचा पा रहे हैं, ठीक वैसे ही शहरी ढांचागत विकास में इस मुद्दे पर ध्यान रखते हुए, हम बच्चों के जीवन को बचा सकते हैं।

जयपुर स्थित बच्चों के सबसे बड़े अस्पताल जे.के. लोन के असोसिएट प्रोफ़ेसर और इन्डियन अकेडमिक पीडियाट्रिक्स (IAP) के सदस्य डॉ. पवन सुलानिया के अनुसार ऐसे मामलों में केयरगिवर्स बच्चों को तत्काल सबसे नजदीकी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र (PHC) लेकर जाते हैं। वहाँ अक्सर पैरामेडिकल स्टाफ या सामान्य फिजिशियन मौजूद रहते हैं, जो बच्चे का इलाज करते हैं। छोटे बच्चे दर्द का इज़हार केवल रोकर कर सकते हैं, ऐसे में सामान्य फिजिशियन भी कई बार बच्चों का सही से ओबजर्वेशन नहीं कर पाते और कई बार बहुत स्थिति बिगड़ने पर उन्हें "बच्चों के अस्पताल" भेजते हैं। ऐसे में बहुत ज़रूरी है कि विशेष स्थितियों में बच्चों की देखभाल और इलाज के लिए PHC स्टाफ को भी जागरूक और प्रशिक्षित किया जाए।

क्या कहते हैं आंकड़े ?

उदयपुर संभाग के सबसे बड़े महाराणा भूपाल राजकीय अस्पताल के साल २०१९-२०२० के आंकड़ों पर गौर करें तो ज्यादातर मामलों में बच्चे गिरकर घायल होते हैं। एक साल में उदयपुर में १४ साल तक के कुल ३ लाख से ज्यादा बच्चे सरकारी अस्पताल में विविध कारणों से आये। इनमे से लगभग २५ हजार बच्चे वे थे जो किसी बीमारी की वजह से नहीं, बल्कि अपनी चोटों का इलाज कराने अस्पताल पहुंचे थे। अर्बन95 टीम ने इनमे से २२,५४६ बच्चों का डाटा लेकर उसका विश्लेषण किया तो चौंकाने वाले तथ्य सामने आये। लगभग ३८% बच्चे विविध कारणों से गिरने के कारण घायल हुए, जबकि २६% बच्चे सड़क दुर्घटना में घायल हुए।

इन बच्चों में ६२% बच्चे सामान्य चोट वाले थे जबकि शेष गंभीर चोटों वाले बच्चे थे। ३% बच्चों की इन चोटों से मृत्यु हुई जबकि ६% बच्चों के शरीर से किसी एक अंग को हमेशा के लिए अलग करना पड़ा।

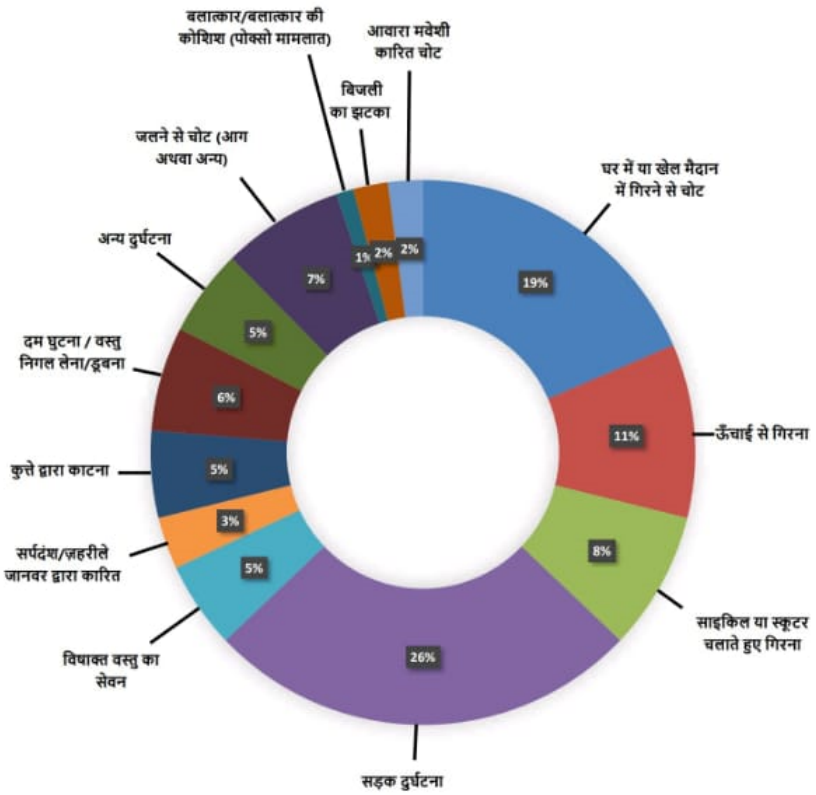

उदयपुर शहर में 0-14 साल के बच्चों को लगने वाली चोटें

नेशनल क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो (२०१९) के डाटा से इनके विश्लेषण करने पर पाया गया कि गिरने से घायल होने वाले बच्चों का प्रतिशत उदयपुर में राष्ट्रीय आंकड़े से बहुत अधिक है, जबकि सड़क दुर्घटना के मामलों में बच्चों के घायल होने में उदयपुर का आंकड़ा राष्ट्रीय आंकड़ों से कम है।

चोट का कारण	नेशनल क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो- २०१९	महाराणा भूपाल अस्पताल, उदयपुर २०१९-२०
सड़क दुर्घटना	४२%	२६%
गिरने से चोट	२१%	३८%
ज़हर/ दम घुटना	१०%	११%
जानवर द्वारा काटना या चोट पहुँचाना	०९%	१०%
हिंसा	०६%	०१%
जलना	०६%	०७%
अन्य	०४%	०५%

कैसे रोका जाए ?

चोटें अपरिहार्य नहीं हैं। इन्हें रोका जा सकता है। बच्चों से जुड़े परिवेश को चाइल्ड फ्रेंडली और सुरक्षित बनाया जा सकता है। सबसे ज्यादा ज़रूरत निगरानी को बढ़ाये जाने की ज़रूरत है, साथ ही बार बार बच्चे को सुरक्षा सम्बन्धी सीख खेल खेल में देनी भी ज़रूरी है। बच्चे को हर बात के लिए रोकने- टोकने और अत्यधिक सुरक्षा को व्यवहार में अपनाने की बजाय हम अपने घर को बच्चों के लिए चाइल्ड फ्रेंडली बनाने से इसकी शुरुआत कर सकते हैं।

इसके बाद हम बच्चों से जुड़े सार्वजनिक स्थान जैसे पार्क, मैदान, सार्वजनिक शौचालय, खेलने के साधन- झूले, सडकें, फुटपाथ, प्ले स्कूल, क्रेच, आंगनवाडी केन्द्रों आदि पर फोकस कर सकते हैं। इसके लिए स्थानीय निकायों (नगर निगम, UIT आदि), स्कूल प्रबंधन और महिला एवं बाल विकास विभाग आदि को इस तरफ ध्यान देने के लिए बाध्य कर सकते हैं। इसके लिए सम्बंधित जिम्मेदार लोगों को जागरूक और प्रशिक्षकित किया जाना भी ज़रूरी है। बच्चों के सीखने के स्थानों से जुड़े संस्थाओं का भी इस तरफ ध्यानाकर्षित करके उन्हें भी सुरक्षित बनाया जा सकता है। राज्य सरकारों और केंद्र सरकार के साथ पैरवी करते हुए हम बड़े स्तर पर बच्चों के लिए सुरक्षित वातावरण बनाने के लिए साथ मिलकर काम कर सकते है।

क्या है अर्बन 95- द्वितीय चरण कार्यक्रम

उदयपुर शहर में बर्नार्ड वेन लीयर फाउंडेशन, नगर निगम, ICLEI साउथ एशिया और इकोरस इंडिया के साझे में संचालित अर्बन95 कार्यक्रम छोटे बच्चों और उनके केयरगिवर्स के लिए स्वस्थ, सुरक्षित और शहर का समर्थन करता है। इसके अंतर्गत उदयपुर शहर के ढांचागत विकास में शुरूआती बचपन के विकास पर ध्यान देना, केयरगिवर्स को बच्चों के स्वास्थ्य- पोषण और आरंभिक बचपन से संबधित आवश्यक जानकारी देना और उदयपुर को इस ढंग से विकसित करना है, ताकि शहर बच्चों और उनके केयर गिवर्स के लिए सुन्दर, सुगम और सुरक्षित हो सके। पहले चरण में उल्लेखनीय प्रगति के बाद हाल ही में उदयपुर में अर्बन95 कार्यक्रम का दूसरा चरण आरम्भ किया गया है। प्रोजेक्ट मैनजमेंट यूनिट के तौर पर ज़मीनी स्तर पर ०६ लोगों की टीम काम कर रही है।